शहर के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित चंडीगढ़ क्लब के चुनाव

प्रधान पद के लिये तीन प्रत्याशी मैदान में

- पुराने प्रधान और बॉडी पर कई तरह के अनियमितताओं के आरोप
- ओपन डिबेट में तीनों प्रत्याशियों व उनके गुट से उतरे उम्मीदवारों ने रखा पक्ष

अर्थ प्रकाश/साजन शर्मा

चंडीगढ़, 14 नवंबर। शहर के सबसे प्रतिष्ठित व पुराने क्लबों में शुमार चंडीगढ़ क्लब के चुनाव आगामी शनिवार यानि 16 नवंबर को होने जा रहे हैं। क्लब के मेंबरों को इन चुनावों के लिये आठ साल से भी ज्यादा वक्त का इंतजार करना पड़ा। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और आठ कार्यकारी सदस्यों सहित नई कार्यकारिणी का चुनाव करने के लिए सदस्य अपने वोट डालेंगे। नतीजे 17 नवंबर को घोषित किए जाएंगे। इस बार अध्यक्ष पद के लिए त्रिकोणीय मुकाबला देखने को मिल रहा है, जिसमें तीन प्रमुख व्यवसायी नरेश चौधरी, सुनील खन्ना और रमनीत चहल मैदान में हैं। तीनों उम्मीदवारों ने अपने-अपने समर्थकों के बीच पहुंचने के लिये सोशल मीडिया पर प्रचार करना शुरू कर दिया है। इसके साथ ही वे क्लब सदस्यों से व्यक्तिगत मुलाकातें कर रहे हैं ताकि उन्हें अपने पक्ष में किया जा सके। ओपन डिबेट में भी तीनों प्रत्याशियों ने खुद व अपने प्रतिनिधियों की मार्फ़त अपना पक्ष और मुद्दे रखे जिन्हें लेकर वह चुनाव में जा रहे हैं।

सुनील खन्ना वर्ष 2002 में चंडीगढ़ क्लब के प्रधान पद पद रह चुके है और पेशे से व्यवसायी है। दूसरे उम्मीदवार नरेश चौधरी भी व्यवसायी है और मौजूदा चंडीगढ़ क्लब में उप प्रधान के पद पर है। तीसरे उम्मीदवार रमनीत सिंह चहल हैं। चंडीगढ़ क्लब के मौजूदा प्रधान संदीप साहनी हैं जिनकी टीम पर कई तरह के आरोप लग रहे हैं। यहां बता दें कि चंडीगढ़ क्लब शहर का सबसे पुराना क्लब है, जो 1957 से संचालित हो रहा है। क्लब में लगभग 7,500 सदस्य हैं, जिनमें न्यायाधीश, अधिवक्ता, व्यवसायी, नौकरशाह और राजनेता, व्यापारियों सहित क्षेत्र की प्रमुख हस्तियां शामिल हैं।

आठ एगजीक्यूटिव मेंबर के लिये कई मैदान में

चंडीगढ़ क्लब के एग्जीक्यूटिव मेंबर के चुनाव के लिए भाजपा नेता देवेंद्र बबला के बेटे परमवीर, नॉमिनेटेड पार्षद डॉ. बेदी के बेटे डॉ. विक्रम बेदी, क्रॉफेड के चेयरमैन हितेश पुरी के बेटे शिवम पुरी सहित शहर के जाने माने टैक्स कंसल्टेंट के बेटे रचित गोयल शामिल हैं। एग्जीक्यूटिव मेंबर के लिए प्रतिष्ठित युवाओं के मैदान में होने के कारण मुकाबला काफी दिलचस्प होने की उम्मीद है। एग्जीक्यूटिव मेंबर के चुनाव के लिए इस बाद 20 उम्मीदवारों ने अपना नामांकन दिया है। उनको वोट देने का हक भी चंडीगढ़ क्लब के वोटिंग सदस्यों के पास ही होता है। एग्जीक्यूटिव मेंबर के लिए 20 उम्मीदवारों में से कुल 8 उम्मीदवार ही चुने जाते हैं।

मौजूदा बॉडी पर भ्रष्टाचार के आरोप

चंडीगढ़ के प्रशासक के सलाहकार को संबोधित एक पत्र में, क्लब के सदस्यों ने आठ वर्षों में पहली बार हो रहे चुनावों में पारदर्शिता का आह्वान किया। 16 नवंबर को चंडीगढ़ क्लब के चुनावों से कुछ दिन पहले, क्लब के सदस्यों ने मौजूदा गवर्निंग बॉडी के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं और गहन जांच और निष्पक्ष चुनाव की मांग की है। क्लब के एक सदस्य नवनीत मोदी ने कहा कि क्लब के भीतर बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन है, जिसमें विशेष रूप से सचिव और अन्य स्टाफ सदस्य शामिल हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि वित्तीय गबन, क्लब के सदस्यों का प्रतिरूपण और क्लब फंड का उपयोग करके धोखाधड़ी वाले लेनदेन हो रहे थे, जो मनी लॉन्ड्रिंग के संभावित निशान का सुझाव दे रहे थे। मोदी ने आगे आरोप लगाया कि क्लब कुछ कर्मचारियों के लिए प्रभावी रूप से एक लाभकारी कार्यालय बन गया है, जो व्यक्तिगत लाभ के लिए भ्रष्ट और धोखाधड़ी गतिविधियों में लगे हुए थे। उन्होंने कहा कि ये कर्मचारी कथित तौर पर संस्था के संविधान में निर्धारित मानदंडों और प्रक्रियाओं का उल्लंघन करके लोगों को सदस्यता प्राप्त करने के लिए धोखा दे रहे थे और उन पर दबाव डाल रहे थे। क्लब के एक अन्य सदस्य कवलजीत सिंह वालिया ने क्लब के अध्यक्ष संदीप साहनी और उनके सहयोगियों पर वित्तीय कुप्रबंधन, कर चोरी और व्यक्तिगत वित्तीय समस्याओं को हल करने के लिए सदस्यों के धन के कथित दुरुपयोग का आरोप लगाया।

हाईकोर्ट भी पहुंचा मामला

एक सेवानिवृत्त सेना अधिकारी और चंडीगढ़ क्लब के स्थायी वोटिंग सदस्य ने इसके प्रबंधन के कामकाज में विसंगतियों का आरोप लगाते हुए पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय का रुख किया था। अनिल कबोत्रा ने आरोप लगाया है कि क्लब की वार्षिक आम बैठक आठ साल से अधिक समय से नहीं बुलाई गई है। आवेदन 2016 में चंडीगढ़ प्रशासन और अन्य उत्तरदाताओं के खिलाफ दायर क्लब के कामकाज से संबंधित एक चल रहे मामले में दायर किया गया है। काबोत्रा ने याचिका में कहा कि क्लब प्रबंधन द्वारा बैठकें आयोजित न करना कंपनी अधिनियम के प्रावधानों के विपरीत था। उन्होंने कहा कि बैठक आयोजित न करने का स्पष्टीकरण क्लब अधिकारियों द्वारा नहीं दिया गया है। पिछले कुछ वर्षों में सदस्यों के पैसे की हेराफेरी के विशिष्ट उदाहरणों के बावजूद, क्लब प्रबंधन ने क्लब के धन का खुलेआम दोहन किया है और सरकार के कारण लीज राशि भी जमा नहीं की है, जो कि एकत्र की गई है। इस तथ्य को क्लब द्वारा तैयार की गई वार्षिक रिपोर्ट में उजागर किया गया है जिसमें संपत्ति कार्यालय द्वारा 31 दिसंबर, 2023 तक लगभग 2.96 करोड़ रुपये की मांग को दर्शाया गया है। काबोत्रा ने कहा कि वह क्लब प्रबंधन और उच्च स्तर के भ्रष्टाचार/धोखाधड़ी/खातों में हेरफेर और धन के गबन के भीतर कदाचार को उजागर करना चाहते थे। उन्होंने कहा कि इस तथ्य को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से उजागर किया। क्लब प्रबंधन द्वारा लोगों को सदस्यता प्रदान करने के लिए उन श्रेणियों में हेरफेर करके अवैध लेनदेन भी किया जाता है, जिनके तहत उन्हें सदस्यता प्रदान की गई है। काबोत्रा ने कहा कि अनाधिकृत सदस्यों को शामिल करने की पूरी कवायद क्लब प्रबंधन चुनावों के मद्देनजर की जा रही है। इसके अलावा, यह भी पता चला है कि क्लब में सदस्यता शुल्क के लेखांकन में बड़े पैमाने पर हेरफेर हुआ है, जिसकी फोरेंसिक ऑडिट के माध्यम से पूरी तरह से जांच की जानी है। बिना किसी उचित कारण या कारण के अज्ञात लोगों को भारी रियायती दर पर सदस्यता दी जा रही है और अतिरिक्त सदस्यता राशि, यानी विभिन्न सदस्यों से एकत्र की गई राशि को क्लब खातों से निकाल लिया जा रहा है और व्यक्तिगत लाभ के लिए उपयोग किया जा रहा है। याचिका पर अभी सुनवाई नहीं हो पाई है। इसमें कहा गया है कि लोगों को मौजूदा क्लब सदस्यों के रिश्तेदारों के रूप में दिखाकर अनधिकृत और रियायती सदस्यता दी जा रही है। ऐसे नए सदस्यों का मौजूदा सदस्यों से दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं है।

जहरीली हवा से घुट रहा खूबसूरत शहर का दम

- जहरीले धुएं से चंडीगढ़ अस्त-व्यस्त, देश में हवा सबसे खराब
- सुबह 11 बजे के आसपास, एक्यूआई 425 अंक तक पहुंच गया, इसके बाद दिल्ली में 423 अंक पर पहुंच गया

अर्थ प्रकाश/साजन शर्मा

चंडीगढ़, 14 नवंबर। जहरीले धुएं ने चंडीगढ़ सहित आसपास के निवासियों को परेशान कर दिया है क्योंकि शहर में हवा की गुणवत्ता आज दिन के दौरान गंभीर श्रेणी में रही। दोपहर के आसपास देश में हवा की गुणवत्ता सबसे खराब थी। सुबह 11 बजे के आसपास अब तक का उच्चतम 425 औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) दर्ज किया गया। इसके बाद दिल्ली का स्थान रहा जो 423 रहा। शहर के मध्य में वायु गुणवत्ता निगरानी स्टेशन - सेक्टर 22 - ने सुबह 11 बजे के आसपास 460 पर एक्यूआई दर्ज किया। इसी तरह, मोहाली जिले की सीमा से लगे सेक्टर 53 एयर मॉनिटरिंग स्टेशन पर एक्युआई 452 था। सेक्टर 25 स्टेशन पर एक्यूआई 363 दर्ज किया गया। यह पहली बार है कि चंडीगढ़ में एक साथ वायु प्रदूषण का इतना लंबा दौर देखने को मिला है। पिछले वर्षों में भी वायु प्रदूषण कभी भी एक या दो दिन से अधिक लगातार इतना अधिक नहीं रहा। पिछले 6 दिनों में जहां एक्यूआई 300 से 400 प्वाइंट के बीच था, वहीं बुधवार देर रात से एक्यूआई गंभीर श्रेणी में पहुंच गया। जैसे-जैसे दिन बीतता गया, शहर में हवा की गुणवत्ता में सुधार होता गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के मुताबिक आज शाम करीब 4 बजे चंडीगढ़ में एक्यूआई 412 प्वाइंट था। शाम 6 बजे के आसपास, हवा की गुणवत्ता सुधरकर बहुत खराब श्रेणी में पहुंच गई क्योंकि औसत एक्यूआई 400 दर्ज किया गया था। स्थिति में और सुधार हुआ और शाम 7 बजे के आसपास एक्यूआई गिरकर 396 हो गया।

8 नवंबर : 310 अंक (बहुत खराब)
9 नवंबर: 332 अंक (बहुत खराब)
10 नवंबर: 339 अंक (बहुत खराब)
11 नवंबर: 331 अंक (बहुत खराब)
12 नवंबर: 345 अंक (बहुत खराब)
13 नवंबर: 380 अंक (बहुत खराब)
14 नवंबर: 412 अंक(गंभीर)

सांसद ने प्रशासक से की स्कूल बंद करने की मांग, अजय जग्गा ने ईवी नीति को दोबारा देखने को कहा

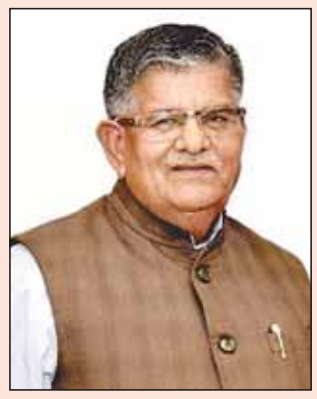

सांसद मनीष तिवारी ने यूटी प्रशासक गुलाब चंद कटारिया से स्थिति कम होने तक सभी स्कूलों, खासकर छोटे बच्चों के लिए स्कूल बंद करने पर गंभीरता से विचार करने का आग्रह किया। इसी तरह, जिला उपभोक्ता संरक्षण परिषद, यूटी के पूर्व सदस्य, अजय जग्गा ने चंडीगढ़ में गंभीर प्रदूषण से निपटने के लिए 2022 ईवी नीति के तत्काल पुनरुद्धार और कार्यान्वयन के लिए यूटी प्रशासक गुलाब चंद कटारिया से आग्रह किया। यह चिंताजनक है कि चंडीगढ़ ने हाल ही में देश में सबसे खराब वायु गुणवत्ता दर्ज की है, जहां एक्यूआई 425 के खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है, जिसे गंभीर श्रेणी के रूप में वर्गीकृत किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रदूषण का यह खतरनाक स्तर महत्वपूर्ण स्वास्थ्य जोखिम पैदा करता है, विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों और श्वसन संबंधी समस्याओं वाले कमजोर समूहों के लिए। स्थिति इस हद तक खराब हो गई है कि धुंध के कारण दृश्यता प्रभावित हो गया है जिससे दैनिक जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि वाहन उत्सर्जन और औद्योगिक प्रदूषण इस गंभीर वायु गुणवत्ता स्थिति के लिए प्रमुख योगदानकर्ता हैं। इसके आलोक में, उन्होंने चंडीगढ़ की 2022 इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) नीति को तत्काल बहाल करने और सख्ती से लागू करने का आग्रह किया। यह नीति, जिसे शुरू में पर्याप्त चर्चा और काफी प्रयास के बाद लागू किया गया था, को अचानक रोक दिया गया, आंतरिक दहन इंजन (आईसीई) वाहनों पर पंजीकरण सीमा को निलंबित कर दिया गया। वर्तमान परिस्थितियों में सुबह और शाम के घने कोहरे के साथ-साथ लगातार दिन के समय स्मॉग की विशेषता है, यह स्पष्ट है कि तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है। 2022 की ईवी नीति को लागू करना हमारे खूबसूरत शहर चंडीगढ़ को दोबारा ऐसे गंभीर प्रदूषण को झेलने से रोकने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम होगा। हालाँकि कुछ विरोध उत्पन्न हो सकता है, यह नीति अंततः शहर और उसके निवासियों के सर्वोत्तम हित में है।

महाडिबेट में हुई गर्मागर्म बहस: सुनील खन्ना रहे अनुपस्थित, अध्यक्ष पद के प्रत्याशी चौधरी और चौहान पहुंचे

चंडीगढ़। चंडीगढ़ क्लब चुनावों में अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद के लिए किस्मत आजमा रहे उम्मीदवारों के बीच उनके वादों व दावों को लेकर चंडीगढ़ प्रेस क्लब में महाडिबेट का आयोजन किया गया। महाडिबेट ने तीव्र बहस, खुलासों और विवादों के साथ मंच तैयार किया। इस महाडिबेट में 150 से अधिक क्लब के सदस्य शामिल हुए। इस बहस ने उम्मीदवारों को अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करने और सदस्यों और एंकर डॉ. सचिन गोयल द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण मुद्दों का जवाब देने का एक अहम अवसर प्रदान किया। अध्यक्ष पद के दो उम्मीदवारों नरेश चौधरी और रणमीत चौहान ने कठिन सवालों का सामना करने का साहस दिखाया जबकि तीसरे उम्मीदवार सुनील खन्ना की अनुपस्थिति ने विवाद खड़ा कर दिया। खन्ना ने आखिरी समय में भाग लेने से मना कर दिया। ऐसा कहा गया कि वह 600 से अधिक नई सदस्यताओं के अनुमोदन को लेकर किए गए अपने बयानों को स्पष्ट करने में असमर्थ थे, जिन पर चुनाव की तारीख की घोषणा के बाद सवाल उठे हैं। इन सदस्यताओं की अनियमितताओं की जांच की जा रही है और खन्ना इस मामले पर टिप्पणी करने के अधिकारी नहीं थे क्योंकि वह उस समय शासी निकाय का हिस्सा नहीं थे। उपाध्यक्षीय बहस में भी नाटकीय घटनाएं घटी, जब एडवोकेट करण नंदा, जिन्होंने पहले भाग लेने का वादा किया था, आखिरी समय में बहस से बाहर हो गए। उनकी अनुपस्थिति ने सदस्यों को निराश किया, क्योंकि उनकी शासी मुद्दों पर स्थिति का पता नहीं चल पाया। उपाध्यक्ष पद के उम्मीदवारों में अनुराग अग्रवाल को उस समय की विवादास्पद नई सदस्यताओं के अनुमोदन में अपनी भूमिका को लेकर कड़ी पूछताछ का सामना करना पड़ा। सदस्यों ने उनसे सवाल किया कि जब वह स्क्रीनिंग समिति के अध्यक्ष थे, तो इस प्रकार की अनियमितताओं को रोकने में उनकी जिम्मेदारी क्या थी। बहस के दौरान एक चौंकाने वाले पल में अग्रवाल ने दावा किया कि उन्हें अपनी अध्यक्षता के बारे में बहुत बाद में पता चला, जिससे जवाबदेही और निगरानी पर और सवाल उठ गए। दूसरी ओर अनुराग चोपड़ा ने संतुलित व्यवहार दिखाया, सवालों का स्पष्टता से उत्तर दिया और चर्चा को पारदर्शिता और बेहतर शासन व्यवस्था की दिशा में मोड़ा। खन्ना और एडवोकेट नंदा की अनुपस्थिति ने चौधरी, चौहान और अन्य उपाध्यक्षीय उम्मीदवारों की तैयारियों की तुलना में अंतर को और स्पष्ट किया, जो सदस्यों के सवालों के साथ संवाद करने के लिए तैयार थे। महाडिबेट ने चंडीगढ़ क्लब में ईमानदारी, जवाबदेही और पारदर्शी नेतृत्व की बढ़ती मांग को सशक्त किया है। चुनावों में केवल दो दिन बाकी हैं, और कई की साख दांव पर लगी है।